Phones : Off : 0712 - 276 1219, 277 7420
Cell: 098230 80845
E-mail : aghafoorparekh@gmail.com
aghafoor_ngp@rediffmail.com
Web Site: www.explore-quran.com
www.iqramedia.net
Explore-Quran on www.YouTube.com

SINCE 1945 PAREKHS

A. Ghafoor Parekh

Parekh Compound, Fire Brigade Road, Lakadganj, NAGPUR - 440 008. (India)

Effective Role of Police

Nashik Police Academy
Monday 17.08.2015

सृष्टी के रचनाकार, आसमान और धरती के मालिक अल्लाह का आभार मानता हूं कि उसने Law and order के रखवालों को संबोधित करने का अवसर दिया। उस मालिक को किसी भी नाम से पुकारें, चाहे GOD कह लें, इश्वर कह लें, प्रभु कह लें, अकाल कह लें, ख़ुदा कह लें, पवित्र ग्रंथ कुरआन में हमारे मालिक ने कहा (७/१८०)

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ
فِيْٓ اَسْمَاۗىِٕهٖ ۭ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (180)

"चाहे अल्लाह कह कर पुकरो या अर्रहमान कह कर, कोई भी नाम से उसे पुकारो, सारे प्यार प्यारे नाम उसी के हैं, और पीछा छोड़ो उनका जो उसके नाम में झगड़ते हैं। ज़रूर वे सज़ा पायेंगे उसकी जो वे हरकतें करते हैं।"

भाईयो और बहनों, आप समाज का ऐसा वर्ग हैं, जिस पर देश में क़ानून और वय्वस्था की ज़िम्मेदारी है। हम देखते हैं कि संसार के स्वामी ने अपनी इस धरती पर अनगिनत प्राणी पैदा किये हैं, जिसमें हम भी एक हैं। परंतु साफ़ दिखाई देता है कि हमें एक ज़िम्मेदार प्राणी बनाया है और धरती के सारे प्राणियों पर हम प्राथमिक्ता दी है। और धरती की सारी उपज, खनिज और पानी पर हमें सर्वप्रथम अधिकार दिया है। पवित्र क़ुरआन में कहा गया (१७/७०)

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ
وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰي كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا (70)

"और निसंदेह हमन आदम के बेटों पर, इनसानों पर बड़ा करम किया, और उन्हें सवारी दी धरती के सूखे और पानी वाले भाग पर, और हमने उन्हें सर्वोत्तम ख़ुराक और जीने की व्यवस्था प्रदान की, और हमारी सृष्टी के अन्य प्राणियों पर प्राथमिक्ता दी।"

इस श्लोक में आदम के बेटों की, यानी हमारी बात कही गई है। यह बात तय है कि सारे इन्सान एक ही जोड़े से ईश्वर ने पैदा किया। क़ुदरत की हर चीज़ एक दूसरे से अलग होती है। एक ही मां-बाप की औलाद की शक्ल भी एक दूसरे से नहीं मिलती। अब इन्सानों के बीच रंग, भाषा, area, धर्म या किसी भो कारण भेदभाव करना या partiality करना, कैसे उचित हो सकता है ?

हम देखते हैं कि हमें पैदा करने वाला प्रभू कभी भेदभाव नहीं करता। सूरज की रौशनी, चांद की चांदनी, बारिश का पानी, हिन्दु पर गिरे और मुसलमान वंचित रह जायें? सिख फ़ायदा उठायें और ईसाइ वंचित रह जायें? गोर लाभ उठायें और काले रह जायें? ऐसा तो प्रभु कभी नहीं करता। फिर हमारी partiality, हमारा पक्षपात और भेदभाव वह कैसे पसंद करेगा? वह तो पवित्र क़ुरआन में कहता है (४९/१३)

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَٰكُم مِّن ذَكَرٍ وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَٰكُمْ شُعُوبًا وَقَبَآئِلَ
لِتَعَارَفُوٓا۟ ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ ٱللَّهِ أَتْقَىٰكُمْ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ (13)

"ऐ इन्सानों, निसंदेह हमने तुम सब को ऐक ही male और female, एक ही स्त्री और एक ही पुरुष से पैदा किया, और तुम्हारे कुटुंब, वंश, बिरादरी और क़बीले हमने बनाया, इसलिये कि तुम एक दूसरे को पहचान सको। तुम्हारे मालिक के नज़दीक तुम्हारा grade इस पर होगा कि तुम अपने मालिक से डर कर अपनी मनमानी से ख़ुद को कितना रोक पाते हो। याद रहे तुम्हारा मालिक तुम्हारी हरकतों की पूरी ख़बर रखता है।"

इस श्लोक के अनुसार हर इन्सान अपने परमपिता आदम की औलाद है। फिर इन्सानों में रंग, भाषा और धर्म, आदि की बुनियाद पर भेद भाव क्यों? हम देखते हैं कि हमारा और सृष्टो का Creator एक है और वह biased and communal नही है तो फिर हम इन्सानों में पक्षपात और भेद भाव कैसे कर सकते हैं? इन्सानों के बीच भेदभाव करने का कोई आदेश आसमानी ग्रंथों में नही मिल सकता।

हम observe कर रहे हैं कि इन्सानों को उनका मालिक तमाम vital and basic needs, equally दिये जा रहा है। फिर वह हमें किसी भी आधार पर इन्सानों में भेदभाव करने का आदेश किस तरह दे सकता है? भले ही हमारी भाषाएं, रंग, area या धर्म अलग अलग हों लेकिन वह लड़ने कि बजाए understanding बढाने और दिलों को जोड़ने का काम करें।

अब हम आते हैं हमारे भारत की तरफ़। आपके सामने म खड़ा हूं। आपके office और मेरे करम फरमा आदर्णीय श्री नवल बजाज साहेब ने मुझे बुलाया, मुझे सुन रहे हैं, इसमें सब से अहम भूमिका और रिश्ता यह है कि आप भी इन्सान हैं और मैं भी इन्सान हूं। यदि मैं मानव न होता तो क्या आप मुझे बुलाते और मुझे सुनते? मैं इन्सान नहीं होता तो आप मुझे इस हॉल के बाहर रस्सी से बांध कर खड़ा कर देते।

अब जब यह तैय है कि मेरा और आपका पहला रिश्ता ही मानवता का है तो फिर किसी और मुद्दे पर भेदभाव क्यों? मेरा और आपका दूसरा रिश्ता भारतीय होने का है। फिर हम भारत वासियों में भेदभाव क्यों करें? इन दो मज़बूत रिश्तों के अलावा अब और किसी रिश्ते की क्या अवश्यक्ता रह जाती है?

अब हम आइने में केवल अपने आपको देखें। अपने आप पर research करें, तो ऐसा लगता है कि बनाने वाले ने जैसे हमारा face बनाया है, वैसा दुनिया में किसी का नहीं बनाया। Finger prints भी जो हमें दिये, और किसी को नहीं दिये।

अब तो साइन्स यह भी कहती है कि हर आदमी की आंख का रंग, बालों की मोटाई और शरीर की सारी चीज़ें किसी दूसरे आदमी से match नहीं होती। ऐसा लगता है कि हर आदमी unique है। पवित्र क़ुरआन में हमें पैदा करने वाले मालिक ने कहा कि (८६/४)

إِن كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿4﴾

"हर इन्सान को हमने security provide की है ।"

आप लोग तो जानते ही हैं कि security, VVIP को प्रदान की जाती है। इसका मतलब यह है कि ईश्वर की नज़र में हर आदमी VVIP है। फिर हम किसी को हलका, हीन और किसी को उच्च कैसे मानते हैं?

अब हम आते हैं आपकी तरफ़। हमारी पुलिस की तरफ़। हम कह चुके हैं कि आपके कांधों पर क़ानून व्यवस्था और शांती की ज़िम्मेदारी है। आपकी इस duty के प्रती आप जवाबदार हैं अपने उच्चाधिकारीयों के। सारे देश की जनता को आप पर भरोसा करना चाहिए। परंतु हम देखते हैं कि लोग पुलिस में जाने से या पुलिस के आ जाने से डरते हैं। भय का यह वातावरण बनने में जनता के साथ साथ आपका रोल भी हो सकता है। अब यह आपके करने का काम है, आपके विभाग के अधिकारायों का करने का काम है। जनता में आपकी छबी कैसे सुधरे इस पर आपको महेनत करना आवश्यक है। मैं इतना ज़रुर कहूंगा कि हर व्यक्ती पर कोई न कोई जवाबदार Officer होता है। ऐसे ही संसार के सारे इन्सान अपने पैदा करने वाले मालिक के सामने जवाबदार है। यह वही मालिक है जो हमारी मौत को भी Deal करता है, और उसी की तरफ हमें अपनी अपनी मौत पर वापस जाना है। जिसने धरती पर भेजा, वही हमको वापस भी बुलाएगा। परंतु उसकी तारीख, समय और दिन हमें नहीं बताया। मगर यह due date and time उसने हमारे माथे पर लिख दी है। यह बात अलग है कि हम किसी भी तरीके से उसे जान नहीं सकते।

अब सोचने का मुद्दा यह है कि जब वह हमें मौत देकर वापस अपने पास बुलाएगा, तो जो ज़िम्मेदारी उसने हमें दी है, क्या उसका हिसाब नहीं लेगा? हम धरती पर रहते बसते हैं। यहां की हर अच्छी चीज़ को हम हमारी capacity के अनुसार use करते हैं। यह सारी चीज़े हमने अवश्य खरीदी होंगी, परंतु इसका उत्पादन कौन करता है? हमने एक गिलास पानी लिया या एक Bottle पानी 15 रुपये में खरीदा, परंतु इस पानी को आकाश की ऊंचाईयों से सृष्टी का सरजनहार उतारता ही नहीं, तो हज़ारों रूपये खर्च कर के भी एक Bottle पानी का हम उत्पादन कर सकते थे? अनाज वह उगाता ही नही, तो हमारा यह जीवन हम यहां गुज़ार सकते थे?

हम बार बार ग्रंथों का हवाला दे रहे हैं। मेर भाईयों किसने पढ़ा है ग्रंथ? यहां मुस्लिम बंधु भी होंगे। हम पूछें कि क्या आपने पवित्र क़ुरआन पढ़ा है? उसके संदेश को समझा है? तो मुझे ९९% विश्वास है कि जवाब होगा, नहीं। इसी प्रकार न हिन्दु वेदों को पढ़ता है, न सिख गुरुग्रंथ को, और न ईसाई बाइबल को। यदि आकाशी ग्रंथ से हमारे पास धर्म होता तो हमें पता होता कि ईश्वर एक है। वह किसी की औलाद नहीं, और ना उसने किसी को औलाद बनाया। वह निर्गुण है, उसमें कोई अवगुण नहीं है। वह निराकार है, उसका कोई आकार नही। वह सर्वशक्तिमान है। न उसका कोई भागीदार है न ही

उत्तराधिकारी। न कोई उसके निर्णय में शामिल है और न ही कोई उसके निर्णय को बदल भी सके । कोई उसे मजबूर न कर सके। कोई उसे धोका न दे सके। उससे छुप कर कोई कहीं जा न सके। क्योंकि आसमानों में भी वह है, धरती पर भी है, धरती के नीचे पाताल में भी है। वह हर जीव से बिल्कुल नज़दीक है। जब पुकारो वह सुनता भी है और देख भी रहा है। उसके राज से हम भाग नहीं सकते, उसकी पकड़ से हम बच नहीं सकते। एक ही रास्ता है कि उसके सामने नतमस्तक हो कर उसकी महानता को स्वीकार कर लें, उसके साथ ईमानदार बन जाएं, क्योंकि पवित्र क़ुरआना में कहा गया है (५०/१६)

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ
وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ (16)

“निसंदेह हमने ही इंसान को पैदा किया है और उसके दिल और दिमाग में उठते विचार को भी हम जानते हैं। और हम उसकी रगे-गर्दन, artery से भी ज़्यादा करीब हैं।”

अब हमारे लिए आवश्यक है कि हम ऐसे मालिक और Boss से डर कर, उसके सामने जवाबदारी के एहसास से जीवन गुज़ारें।

देवियो और सज्जनो, हम जानते हैं कि हर देश का संविधान होता है। आपके पुलिस डिपार्टमेंन्ट को भी कोई न कोई क़ाएदे या क़ानून की पुस्तक होगी। क्या ड्युटी है और क्या नहीं करना चाहिए। इस सृष्टि के बनाने वाले ने भी हम इन्सानों के लिए कोई क़ानून, क़ायदा और संविधान दिया होगा? जी हां, हर ज़माने में उसने किसी महापुरूष पर आकाश से अपनी वाणी भेजी और उन सारी पुस्तकों में वह सविधान मौजूद मिलेगा। हमारा दुर्भाग्य यह है कि हमने कभी उन पुस्तकों को पढ़ने और समझने का कष्ट नहीं उठाया। हम धर्म के नाम पर कुछ rituals कर लेते हैं। कुछ पूजापाठ, नमाज़ रोज़े कर लेते हैं। हज करके भी हम झूट बोलते हैं। व्यापार में नाप तौल हमारा बराबर नहीं होता। नौकरी में हम ईमानदार नहीं होते, तो नौकरों के साथ हमारा बर्ताव मानवता भरा नहीं होता। हम अपने परिवार के साथ, अपने पर्यावरण के साथ, अपने देश के साथ ईमानदार न हो सकें तो हम अपने परवरदिगार के साथ कैसे ईमानदार रह सकते हैं? ईश्वर हमारे पूजापाठ, नमाज़ रोज़े से अधिक ज़ोर सामाजिक कामों पर देता है। पवित्र क़ुरआन के खंड १०७ में हमारा मालिक कहता है।

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالدِّينِ (1) فَذَٰلِكَ الَّذِي يَدُعُّ الْيَتِيمَ (2)
وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ (3) فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ (4) الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ
سَاهُونَ (5) الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ (6) وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ (7)

“क्या तुमने ध्यान दिया उस व्यक्ति पर जो दीन, धर्म को झुटलाता है? यह वही व्यक्ती हो सकता है जो अनाथ और वंचित की चिन्ता नहीं करता। और भूके को खाना खिलाने की उसकी इच्छा नहीं होती! निसंदेह बर्बाद होंगे वे नमाज़ पढ़ने वाले जो अपनी इबादत में सुस्ती करते हैं। दिखावा करते हैं, और लोगों के छोटे मोटे काम नहीं आते।”

अब इस से अधिक साफ़ बात क्या होगी? दूसरों के काम आने, अनाथों और भूकों की चिन्ता करने पर नमाज़ रोज़े से अधिक ज़ोर दिया गया है। परंतु हमारा दुर्भाग्य यह है कि हमने क़ुरआन पढ़ा ही कब, और उसे समझा ही कब ! फिर हमें क्या पता कि किस चीज़ को प्राथमिक्ता दी गई है । हम तो accidentally एक मुलिम परिवार में जनमें हैं । इस कारण हम मुस्लिम हो गए । पवित्र क़ुरआन में बार बार कहा गया है कि धर्म जन्म से नहीं होता, कर्म से होता है । इस सोच से धर्म के कारण गर्व आता है और हमारे रब को किसी का गर्व पसन्द नहीं आता । गर्व आने के बाद आदमी अपने आप को ऊंचा और दूसरों को हीन समझने लगता है । फिर वह दूसरे इन्सानों से हमदरदी क्यों करेगा और उनकी सहायता भी क्यों करेगा !

खुद पर गर्व करने से इन्सान की वेशभूषा भी बदलेगी । वह अपने आप को दूसरों से ऊंचा समझने लगेगा । कुछ धार्मिक विधी और rituals रीति रिवाज करके वह अपने आपको संतुष्ट कर लेगा । परंतु उसका मालिक उससे मानवता के उद्धार का काम लेना चाहता है कि वह मानव समाज के लिए लाभदायक बने। जब तक एक आदमी अच्छा इन्सान ही नहीं बनता, वह अच्छा मुसलमान या अच्छा हिन्दु कैसे बन पाएगा !

अब हम आते हैं इस देश में बसने वाली minority की तरफ़ । मैं ऐसा समझता हूं कि हमारे देश में अभी भी राष्ट्रीयाता नहीं आई है । अगर हम में खरी राष्ट्रीयाता हो तो हम बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक की तरह सोच ही नहीं सकते । वैसे भी इस देश को बहु और अल्प में बांटा नहीं जा सकता । यहां सभी अल्पसंख्याक हैं । हर धर्म के मानने वाले यहां आबाद हैं। ऐसा कोई दूसरा देश मुझे नज़र नहीं आता । मैं भारत को सलाम करता हूं ऐसे ही बहुत से कारणों से । जब भी हम अल्पसंख्यक या minority की बात करते हैं तो हमें केवल मुस्लिम ही दिखाई देते हैं। परंतु हम सिख, जैन, बौद्ध, ईसाई, पारसी और अधर्मियों को भूल जाते हैं। हिन्दु धर्म में भी बहुत सारे पंथ हैं । मूर्तीपूजक, ईश्वर की कोई मूर्ती नहीं मानने वाले, राजा रामचंद्र को पूजने वाले, तो south India में (द्रविड) रावन को पूजने वाले, सनातन धर्मी इत्यादि ।

दिखाई यह देता है कि यहां सब अल्पसंख्यक ही हैं । परंतु यहां यह सब न देखते हुए जिन कांधों पर क़ानून और व्यवस्था की ज़िम्मेदारी आती है, उन्हें यह ख़याल भी रखना होगा कि अल्पसंख्यक की मानसिक्ता में हमेशा यह बात रहती है कि हमारे साथ भेदभाव बरता जा रहा है । हम पहले कह चुके हैं कि आम जनता पोलिस से बहुत डरती है । और उसकी मानसिकता में बैठा हुआ है कि पुलिस सांप्रदायिक दंगों के समय पक्षपात कर जाती है । यदि पुलिस पक्षपात न करे तो यह मानसिकता बदल सकती है । परंतु इतनी बड़ी संख्या में पुलिस में भी सुधार आ जाए उसकी जगह हमारा यह सुझाव है कि दूसरे से अधिक अपने को सुधारना बड़ा आसान है । इंसान अगर खुद सुधर जाए तो सोसायटी सुधर सकती है । और अगर सोसायटी सुधर जाए तो देश सुधर सकता है ।

इंसान के सुधार की तरफ़ सारे ग्रंथ हमारा ध्यान केन्द्रित कराते हैं । हम देखते आ रहे हैं कि संसार का एक स्वामी है । उसी ने हमको इस संसार में पैदा किया । अब हमारा टेस्ट लिया जा रहा है कि हमारा आचरण क्या है? हम दुनिया में अपना जीवन किस प्रकार से व्यतीत करते हैं? हमारी कमाई के साधन कैसे हैं? दूसरे लोगों के साथ में हमारा आचरण कैसा है? घर में हमार व्यवहार कैसा है और बाहर कैसा है? हमारा व्यवहार अपनों के साथ कैसा है और दूसरों के साथ कैसा है? हम स्वच्छ

जीवन गुज़ारते हैं या अस्वच्छ। हम positive या सकारात्मक तरीक़े अपनाते हैं या negative और नकारात्मक तरीक़े अपनाते हैं? हम अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनते हैं या उसके signals को दबाते हैं? यह सब watch किया जाता है। जब हम CCTV लगा सकते हैं तो क्या सर्वशक्तिमान ईश्वर भी हम पर कॅमरे नही लगा सकता है? और उसे कॅमरे की अवश्यक्ता भी नहीं। वह तो हर जगह हर समय हर एक को न केवल watch कर रहा है, बल्कि वह तो हमारे दिल के भेद भी जानता है। पवित्र क़ुरआन के खंड ५८ के श्लोक ७ में हमारा मालिक कहता है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ مَا يَكُونُ مِن نَّجْوَىٰ ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ
رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ مِن ذَٰلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ
أَيْنَ مَا كَانُوا ۖ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (7)

“क्या तुम देखते नही कि ईश्वर को आसमान और ज़मीन की हर चीज़ की जानकारी है ! कोई भी तीन लोगों की ऐसी कोई meeting नही होती, जिसमें ईश्वर चौथा न हो। न ही पांच लोगों की जिसमें ईश्वर छ्ट्टा न हो। चाहे इस से बड़ी कोई meeting हो चाहे इस से छोटी, ईश्वर उनके साथ ही होता है, जहां कहीं भी वे हों। फिर ईश्वर Judgement Day इन्सानों को उनके कर्मो की ख़बर देगा। बेशक ईश्वर को हर एक के हर कर्म की जानकारी हुआ करती है।”

हम कोई duty अंजाम दे रहे हों और हमारे चीफ़ या ऊपर के officer आ जाएं तो हम attentive हो जाते हैं। हम पर हमारा मालिक मौजूद है। हमें देख रहा है, हमें सुन भी रहा है। यदी यह ख़्याल हम में रहे तो हम ग़लत काम कर ही नहीं सकते। पक्षपात और भेदभाव भी नहीं कर सकते। मैं गुजरात का हूं और एक बात मैंने गुजराती मैग़ज़ीन में पढ़ी थी। अच्छी थी इसलिए याद रह गई। आपको सुनाता हूं। उम्मीद है इतनी गुजराती तो आप समझ लेंगे। माणस ज्यार पाप करे छे त्यारे चारे दिशा जुवे छे, पांचवी दिशा भुली जाए छे के ऊपर थी ईशवर अेने जोई रहयो छे। परंतु पवित्र क़ुरआन छटी दिशा भी बताता है(९९/४)

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا (4)

“इंसाफ के उस दिन यह धरती भी बताएगी कि इसकी पीठ पर हमने क्या पाप किए ! कैसे भेदभाव किए ! कितने अत्याचार किए और यह भी बताएगी कि कितने इंसाफ़ भी किए !”

भाइयों और बहनों ! मैं भी आप जैसा ही इंसान हूं। भूल चूक बोलने बताने में हो जाती है। आप से माफ़ी चाहता हूं, और मेरे रब से भी। मैं कोई विद्वान आदमी नहीं हूं सीधा साधा बंदा हूं। यह तो आदर्णीय नवल बजाज साहेब की कृपा है कि उन्होंने मुझे बुलाया, मान सम्मान दिया, हालांकि sorry और माफ़ी मांगते हुए कहता हूं कि पुलिस वालों से मान सम्मान

मिलना भी बड़ा स्वभागय है। मैं आप सभी का आभारी हूं। आप लोगों ने इतनी लंबी बात धैर्य से सुनी। अल्लाह आप सबको, हमको, हमारे देश को और विश्व को हर आफत से बचाए, आमीन।

*****